श्री शिव स्तोत्रं (देवदानव कृतं)

श्री शिव स्तोत्रं (देवदानव कृतं)

देवदानवा ऊचुः |
नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष सर्वतोऽनंतचक्षुषे |
नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय धन्विने || 1 ||

नमस्त्रिशूलहस्ताय दंडहस्ताय धूर्जटे |
नमस्त्रैलोक्यनाथाय भूतग्रामशरीरिणे || 2 ||

नमः सुरारिहंत्रे च सोमाग्न्यर्काग्र्यचक्षुषे |
ब्रह्मणे चैव रुद्राय नमस्ते विष्णुरूपिणे || 3 ||

ब्रह्मणे वेदरूपाय नमस्ते देवरूपिणे |
सांख्ययोगाय भूतानां नमस्ते शंभवाय ते || 4 ||

मन्मथांगविनाशाय नमः कालक्षयंकर |
रंहसे देवदेवाय नमस्ते वसुरेतसे || 5 ||

एकवीराय सर्वाय नमः पिंगकपर्दिने |
उमाभर्त्रे नमस्तुभ्यं यज्ञत्रिपुरघातिने || 6 ||

शुद्धबोधप्रबुद्धाय मुक्तकैवल्यरूपिणे |
लोकत्रयविधात्रे च वरुणेंद्राग्निरूपिणे || 7 ||

ऋग्यजुः सामवेदाय पुरुषायेश्वराय च |
अग्राय चैव चोग्राय विप्राय श्रुतिचक्षुषे || 8 ||

रजसे चैव सत्त्वाय तमसे स्थिमितात्मने |
अनित्यनित्यभासाय नमो नित्यचरात्मने || 9 ||

व्यक्ताय चैवाव्यक्ताय व्यक्ताव्यक्तात्मने नमः |
भक्तानामार्तिनाशाय प्रियनारायणाय च || 10 ||

उमाप्रियाय शर्वाय नंदिवक्त्रांचिताय वै |
ऋतुमन्वंतकल्पाय पक्षमासदिनात्मने || 11 ||

नानारूपाय मुंडाय वरूथ पृथुदंडिने |
नमः कपालहस्ताय दिग्वासाय शिखंडिने || 12 ||

धन्विने रथिने चैव यतये ब्रह्मचारिणे |
इत्येवमादिचरितैः स्तुतं तुभ्यं नमो नमः || 13 ||

इति श्रीमत्स्यपुराणे क्षीरोदमथवर्णनो नाम पंचाशदधिकद्विशततमोऽध्याये देवदानवकृत शिवस्तोत्रं |